515

drishti | दृष्टि The Vision

# हिन्दी साहित्य

## टेस्ट-11

## (प्रश्न पत्र-I)

**DTVF / OPT-24 HL-2411**

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

| निर्धारित समय: तीन घंटे<br>*Time Allowed: Three Hours* | अधिकतम अंक : 250<br>*Maximum Marks : 250* |
| --- | --- |

नाम (Name): प्रेमसिंह

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✓ | नहीं | |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 2411 dt. 30/08/2024

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2024] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2024]:

| 1 | 1 | 3 | 2 | 5 | 5 | 6 |
| --- | --- | --- | --- | --- | --- | --- |

---

## *Question Paper Specific Instructions*

***Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:***

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

*The number of marks carried by a question/part is indicated against it.*

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

*Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly*

*Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.*

*Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.*

---

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______



मूल्यांकनकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Evaluator (Code & Signatures)*

पुनरीक्षणकर्त्ता ( कोड तथा हस्ताक्षर )
*Reviewer (Code & Signatures)*

# Feedback

1. Context Proficiency (संदर्भ दक्षता)
2. Introduction Proficiency (परिचय दक्षता)
3. Content Proficiency (विषय-वस्तु दक्षता)
4. Language/Flow (भाषा/प्रवाह)
5. Conclusion Proficiency (निष्कर्ष दक्षता)
6. Presentation Proficiency (प्रस्तुति दक्षता)

drishti | दृष्टि The Vision

## खण्ड - क

1. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(क) सिद्ध-साहित्य में खड़ी बोली का प्रारंभिक स्वरूप

खड़ी बोली का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ है। सिद्ध साहित्य में आरम्भिक खड़ी बोली की विशेषताएं दिखाई देती हैं। सिद्ध का साहित्य विशेष साहित्य नहीं है बल्कि सरहपा, लुईपा, कन्हपा जैसे 84 सिद्धों ने अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं के प्रचार हेतु चर्यापदों की रचना की वही आगे जाकर सिद्ध साहित्य कहलाता है।

सिद्धों के साहित्य में आरम्भिक खड़ी बोली के लक्षणों हेतु ~~सिद्ध~~ सरहपा की पंक्तियां दृष्टव्य हैं:-

"पंडिअ सअल सत्त बक्खाणअ
देहहि बुद्ध बसन्त ण जाणअ ||"
(सरहपा)

अकारान्तता, न की जगह ण का प्रयोग इत्यादि में खड़ी बोली का

drishti | दृष्टि The Vision

प्रभाव प्रमुखता से देखा जा सकता है

सिद्धों की पंचमकार पद्धति तथा योग मार्ग के प्रचार हेतु किये गये तंत्र मंत्र का प्रभाव आगामी भक्ति साहित्य साहित्य में कबीर तथा आधुनिक काल में निराला के काव्य पर देखा जा सकता है

अगर शिल्प की बात करे तो दोहा छंद, चर्यापद, का प्रयोग तुलसी, बिहारी लाल ने किया है

वही सिद्धों द्वारा आडम्बरो का विरोध, तंत्र मंत्र, जातिवाद का विरोध जैसी लेखनगत विशेषताए भी आधुनिक खड़ी बोली से समता रखती है सिद्धों की भाषा व्यवस्था हिं विभक्ती अकारान्त, अकारान्त जैसी विशेषताए भी खड़ी बोली को देखा जा सकता है



उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) 'बुंदेली' बोली

'बुंदेली' पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की बोली है जिसका विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। यह बुंदेलखण्ड क्षेत्र में बोली जाती है

मुख्य भाषागत विशेषताएं

(1) ड का र, ण का 'न' की प्रवृत्ति —

सड़क > सरक, पाणी > पानी

(2) ष, श का उच्चारण 'स' रूप में —

षटकोण > सटकोन

(3) बुंदेली की वर्णमाला खड़ी बोली हिन्दी के समान है

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(4) बुंदेली के व्याकरण में पुल्लिंग से स्त्रीलिंग बनाने हेतु, इयाँ, आनी, की प्रत्ययों का प्रयोग।

ठाकुर > ठकुरानी

बेटी > बिटियाँ

(5) कारक व्यवस्था में कर्म तथा करण कारक हेतु क्रमशः को, के, कू, तथा से, सु, के वाहन का प्रयोग

(6) बुंदेली के सर्वनामों में - मइ, तुई, तुम्हारा, मेरा, तेरा का प्रयोग।

अतः बुंदेली एक विकसित भाषा के साथ हिन्दी की विकास को व्यक्त करती है।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) पहाड़ी हिन्दी

पहाड़ी हिन्दी का विकास खस अपभ्रंश से हुआ है तथा मुख्यत: कुमाऊं व गढ़वाल क्षेत्र में बोली जाती है

पहाड़ी हिन्दी में सानुनासिकता का अकारान्तता की प्रवृत्ति अधिक है तथा अकारान्त अनुनासिकता की प्रवृत्ति

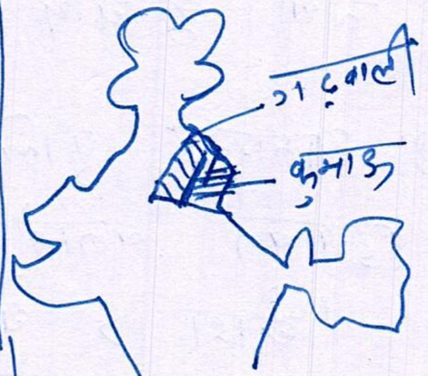

पहाड़ी हिन्दी

पहाड़ी हिन्दी
- कुमाऊं
- गढ़वाली

① कुमाऊं ⇒ प्रमुखत: कुमाऊं क्षेत्र में नैनीताल, पिथौरा गढ़ व रानीखेत क्षेत्र में बोली जाती है इस बोली पर राजस्थानी बोली का अधिक प्रभाव

ii) कुमाऊं की भाषागत विशेषताएं

(1) राजस्थानी प्रभाव के कारण न का 'ण' तथा मूर्धन्य 'ळ' का प्रयोग

(2) आकारान्त पुल्लिंग संज्ञाओं का बहुवचन बनाने के लिए 'उ' का प्रयोग 'घोड़ा > घोड़ु'

(3) अनुनासिकता अधिक - दैत, पंईसा,

(4) भविष्य काल हेतु 'ल' 'चलल'

गढ़वाली → पौड़ी गढ़वाल व टिहरी गढ़वाल क्षेत्र की बोली

→ पंजाबी व राजस्थानी का का प्रभाव

→ अनुनासिकता की प्रवृत्ति

→ आकारान्त पुल्लिंग एकवचन से बहुवचन बनाना - घोड़ा > घोड़न

भविष्य काल 'ल' रूप तथा सर्वनामों के तेरा, म्हारा, थारा, का प्रयोग अधिक।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) रहीम के साहित्य में खड़ी बोली हिन्दी का प्रारंभिक स्वरूप

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

रहीम कृष्ण काव्य धारा के प्रमुख कवि है ये अकबर के दरबार में थे। प्रमुख रचनाओं में बरवै, नायिका भेद व मदनाष्टक प्रमुख है।

रहीम के काव्य में खड़ी बोली प्रत्यक्ष तौर पर नही है बल्कि शाब्दिक संगठन व ढांचा के आधार पर है जैसे —

"रहिमन पानी राखिए, बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे, मोती मानस, चून।।"

यह ढांचागत गठन स्तर पर अकारान्तता, आकारान्तता, ईकारान्तता का प्रयोग खड़ी बोली का है।

"रहिमन ओछे नरन से, बैर भली न प्रीत।
काटे चाटे श्वान के दुहूं भांति विपरीत।"

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

यह 'नरन' ते इत्यादि शब्दों को छोड़ दे तो बाकी वाक्य पर खड़ी बोली का प्रभाव दिखाई देता है।

रहीम की अन्य रचना 'मदनाष्टक' पूर्णतया खड़ी बोली की रचना है —

" पकरि परम प्यारे सावरे को मिलाओ।
~~अलाल~~ असल अमृत प्याला क्यों न पुसको पिलाओ।"

सर्वनाम, अकारान्तता, आकारान्तता (तुसको) इत्यादि विशेषता इसी तरह आधुनिक खड़ी बोली में ली गई है। अतः रहीम का काव्य न केवल मार्मिकता धारण करता है बल्कि आधुनिक खड़ी बोली के निर्माण में भी मील का पत्थर है। रहीम का छन्द भी दोहा छंद है।

(ङ) केलॉग का हिन्दी व्याकरण-ग्रंथ

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

2. (क) मध्यकाल में साहित्यिक भाषा के रूप में 'अवधी' के विकास में सूफी काव्यधारा के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) हिन्दी में अनूदित लेखन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) सर्वनाम और उसके भेदों पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

**3.** (क) राष्ट्रभाषा हिन्दी के विकास में गैर हिन्दीभाषी राज्यों के योगदान पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

राष्ट्रभाषा किसी भी देश की वह भाषा होती है जो जन सामान्य के हृदय को मिलाने का काम करती है। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हिन्दी व हिन्दुस्तानी भाषा भारत की जन संपर्क भाषा रही। तथा सभी हिन्दी व अहिन्दी क्षेत्रों में हिन्दी का प्रचार व प्रसार तीव्र गति से हुआ ताकि राष्ट्रीयता की भावना का तीव्र प्रचार प्रसार हो सके।

गैर हिन्दी भाषियों का योगदान

(a) आंदोलन में हिंदुस्तानी भाषा
गुजरात, प. बंगाल, महाराष्ट्र, तमिलनाडु, केरल, कर्नाटक

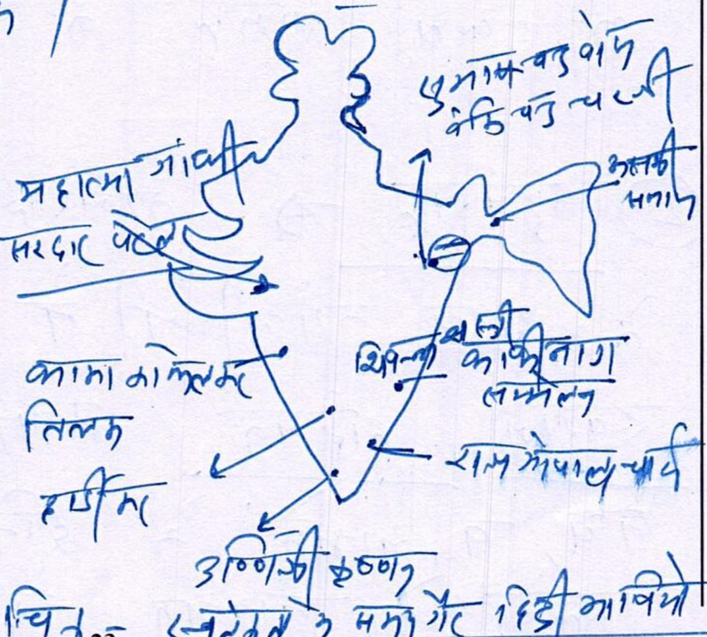


चित्र: स्वतंत्रता के समय गैर हिंदी भाषियों द्वारा हिंदी प्रसार

drishti | दृष्टि The Vision

जैसे गैर हिन्दी राज्यों में तीव्र गति से विकसित हुई। प्रमुख योगदान निम्न प्रकार है —

① महाराष्ट्र ⇒ महाराष्ट्र में काका कालेलकर, महात्मा गांधी, तिलक, सरदार पटेल तथा सावरकर बंधुओं ने हिन्दी भाषा व लिपि के विस्तार हेतु विशेष प्रयास किये। तिलक और सावरकर की आखी भारत रची तथा भाषा विभाग की वर्धा समिति के प्रयास प्रमुख है।

② गुजरात → गुजराती भाषा समाज के साथ गांधी जी ने अपने पत्रों स्वराज, हरिजन तथा हरिजन सेवक पत्र, व आश्रमों के दैनिक क्रिया कलापों के माध्यम से हिन्दुस्तानी



उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

को बताना है। गांधी जी ने अपने इंदौर के भाषण में कहा की स्वराज का प्रश्न हिंदी का प्रश्न है, यथा हिन्दी यहाँ के गरीब, पिछड़ो, दलितों व ग्रामीणों की भाषा है। अगर स्वराज लाना है तो हिन्दुस्तानी भाषा भी।

③ आन्ध्र प्रदेश – हिन्दी भाषा विकास में पट्टाभि सीतारमैया, वेंकटप्पा, के प्रयास तथा 'काकीनाडा कांग्रेस सम्मेलन' ने हिन्दी को अपनाया तथा हिन्दी भाषा का प्रसार किया।

④ तमिल नाडु ⇒ तमिल नाडु में गांधीजी के के पुत्र हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु गये तथा मद्रास हिन्दी

सभा, भाषा समिति, रामास्वामी पेरियार, चक्रवर्ती राजगोपालाचार्य, अय्यर इत्यादि का प्रयास प्रमुखतः से देखा जा सकता है

(5) कर्नाटक – कर्नाटक में केलगाव अधिवेशन, प्र-सु. हार्डीकर, माधवन इत्यादि के प्रयासों द्वारा हिंदी प्रचार प्रसार किया गया

(6) केरल – अण्णाजी कृष्णन, वेंकट अय्यर द्वारा त्रिवेन्द्रम में हिंदी भाषा व विकास परिषद का गठन कर हिंदी प्रचार-प्रसार।

(7) पश्चिम बंगाल – सुभाष चन्द्र बोस, रविन्द्रनाथ ठाकुर, सुरेन्द्र नाथ बनर्जी, बंकिमचन्द्र चटर्जी जैसे क्रांतिकारियों व साहित्यकारों ने हिंदी भाषा का विकास किया

अतः गैर हिंदी भाषी राज्यों का हिंदी के प्रचार प्रसार के अविस्मरणीय योगदान रहा है



उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) बिहारी हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 15

बिहारी हिंदी का विकास मागधी अपभ्रंश से हुआ है जो मुख्यत: मगध प्रदेश, छपरा, आरा, बलिया, पूर्वी उत्तर प्रदेश व झारखण्ड में बोली जाती है। बिहारी उपभाषा वर्ग की बोलियाँ आपस में काफी नजदीकी है।

~~बिहारी~~ उप
मागधी अपभ्रंश
↓
बिहारी उपभाषा
→ भोजपुरी
→ मैथिली
→ मगही

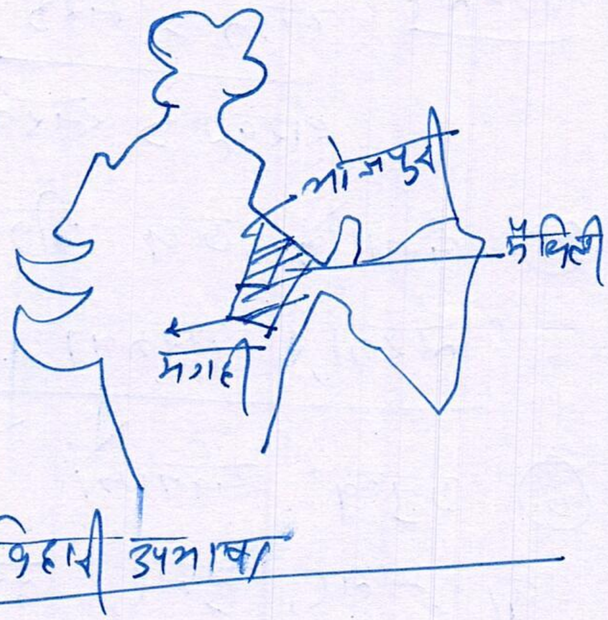


(1) भोजपुरी ⇒ भोजपुरी बिहारी हिन्दी वर्ग की सबसे अधिक लोगों द्वारा

drishti | दृष्टि The Vision

बोली जाती है तथा मुख्यतः आरा, छपरा, बलिया, देवरिया, गोरखपुर, बस्ती, बहराइच क्षेत्रों में बोली जाती है

भाषागत विशेषताएं

① 'ड का र', 'ण का न', 'श.ष का स' की प्रवृत्ति · सड़क > सरक, शरबत > सरबत

② संज्ञा के प्राय तीन रूप — 'लरका, लरकवा, लरकउवा'

③ प्रमुख सर्वनामों में — जैसे म्हार, तुहार, तुई, वाहि, ओकरा, एकरा

④ एक वचन से बहुवचन बनाने हेतु 'लोगन' तथा 'सन' का प्रयोग
उदा आपन, तुम लोगन

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(5) भोजपुरी में भूत काल के लिए 'ल' रूप तथा भविष्य के लिए 'ब' का

= भूतकाल - गइल

भविष्य - जाइब, खाइब

भोजपुरी में ~~शिष्ट~~ शिष्ट ~~साहि~~ साहित्य का अभाव है तथा लोक साहित्य का विकास अधिक हुआ मुख्य साहित्यकारों में भिखारी ठाकुर, राहुल सांकृत्यायन व नागार्जुन प्रमुख है। भोजपुरी भारत से बाहर फिजी, मॉरिशस में भी बोली जाती है।

(2) मैथिली - साहित्यिक रूप से सबसे अधिक विकसित, मिथिलांचल की बोली। विद्यापति का काव्य। क्रिया का 'ल' रूप तथा सर्वनाम में 'आप' का प्रयोग।

(3) मगही → राची, के आस पास का प्रदेश। अधिकतर विशेषताएं भोजपुरी के समान।

उदा: नकारात्मक शब्द = जन > हन



अतः बिहारी हिन्दी के अपनी विशेषताओं के प्रमुख है

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) हिंदी गद्य के विकास में ईसाई मिशनरियों की भूमिका पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

हिंदी गद्य साहित्य का विकास 19वी शताब्दी में अंग्रेजी राज्य के आगमन के साथ हुआ। ईसाई मिशनरियों का हिन्दी गद्य विकास मे भूमिका निम्न प्रकार है —

① ईसाई मिशनरियो ने बाइबिल का हिन्दी अनुवाद किया तथा छापाखाना की मदद से उसकी प्रतियां भारत में बंटवाई।

② ईसाई मिशनरियों के पत्र-पत्रिकाओं के माध्यम से खड़ी बोली का विकास।

③ ईसाई धार्मिक मान्यताओं व बाइबिल के उपदेशों का प्रचार जनजातीय क्षेत्रों में खड़ी बोली के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

माध्यम से।

(4) फोर्ट विलियम कॉलेज के माध्यम से हिंदी का विकास व प्रचार तथा अनुवाद का कार्य।

(5) ईसाई मिशनरियों ने हिंदी का शब्दकोश रचना का ~~प्र~~ प्रयास किया ~~तथा~~ का

(6) ईसाई ~~मिशन~~ ~~मिशनरि~~ मिशनरियों ने हिंदी भाषा का व्याकरण लिखने में भी प्रमुख भूमिका अदा की उदाहरण के लिए- केलाग का व्याकरण।

(7) ईसाई मिशनरी न केवल हिंदी का प्रचार-प्रसार कर रहे थे

बल्कि प्राचीन संस्कृत ग्रंथों तथा अंग्रेजी साहित्य का भी हिन्दी में अनुवाद किया। जैसे- मैक्समूलर की रचनाएं।

अतः ईसाई मिशनरियों ने हिन्दी भाषा व साहित्य के विकास में महत्व एवं भूमिका निभाई।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

4. (क) मध्यकाल में प्रयुक्त साहित्यिक ब्रजभाषा में निहित गंभीर कलात्मकता के कारणों का अन्वेषण कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

ब्रजभाषा पश्चिमी हिन्दी उपभाषा वर्ग की प्रमुख बोली है जो भक्ति काल में में तुलसी, मीरा, सूरदास के काव्य तथा रीतिकाल में बिहारी, घनानंद, पद्माकर इत्यादि कवियों के द्वारा काव्यात्मक भाषा के रूप में प्रसिद्ध हुई।

मध्यकाल में ब्रजभाषा में गंभीर कलात्मकता व चंचलता का का विकास हुआ जिसके कारण बिहारी के दोहे चलचित्र जैसे बन गये। कलात्मकता के प्रमुख कारण निम्नलिखित है ⇒

① राजनीतिक कारण ⇒ दरबारी माहौल तथा रसिक सम्प्रदाय को रसानुभूति हेतु चंचल व कलात्मक भाषा का

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

विकास अधिक नहीं था। क्योंकि दरबारी माहौल में कम समय में रस उत्पन्न करने हेतु वह भाषा सकी थी जिसमें चंचलता व समाहार क्षमता अधिक हो।

② मूलतः कवि ⇒ भक्ति काल के लेखक मूलतः कवि थे। जो भाषा का प्रयोग तन्मयता के साथ चमत्कार उत्पन्न करने करते थे। जबकि भक्ति काल के सूर तुलसी व कबीर मूलतः भक्त थे - जैसे

'कबीर - तुम जिन जान्यो गीत है, ये निज ब्रह्म विचार'

तथा, कवि कर्म करना भक्ति काल के कवियों का पेशा तथा व्यवसाय था

③ मुक्तक काव्य ⇒ भक्ति काल में मुख्यतः मुक्त काव्य की रचना की

गई। बिहारी ने बिहारी सतसई के दोहा जैसे 48 मात्राओं के छंद से अद्भुत व लयात्मक वातावरण पैदा किया जिसे निम्न उदाहरण द्वारा देखा जा सकता है -

"कहत नटत रीझत, खिजत, मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत है नैनन ही सो बात।"

तथा इसकी कारण रसिक समुदाय को मांसल सौंदर्य के नखशिखवर्णन द्वारा ही संतुष्ट किया जा सकता था।

④ शृंगार का वर्णन ⇒ मध्यकालीन कवियों विशेषकर दैहिक व संयोग शृंगार का ही वर्णन किया है इस कारण भी ब्रजभाषा गंभीर रूप से लयात्मक हो गई। जैसे पद्माकर की निम्न पंक्तियों से देख सकते हैं -

"गुलगुली गिलमें गलीचा है, गुनीजन है,
चिक है चिरागन की माला है"

drishti | दृष्टि The Vision

" अतः मध्यकाल में दरबारी काव्य, कवियों द्वारा नायिकाओं की लीलाओं व कलात्मक श्रृंगार व चमत्कारिक वर्णन के कारण ब्रजभाषा गंभीर कलात्मकता से भर उठी। इसके अलावा गंभीर व वियोग का वर्णन किया जाता तो भी वह कलात्मक ही प्रतीत होता — जैसे पद्माकर की पंक्तियाँ हैं -

" बिरह बढ़ाओ तो न पावस बढ़ाओ,
पावस बढ़ाओ तो न बिरह बढ़ाओ"

अतः मध्यकाल में ब्रज अपनी समाहार शक्ति, सरल शब्दता, चंचलता व कलात्मकता हेतु प्रमुखता से विकसित हुई।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) उन्नीसवीं सदी में खड़ी बोली हिंदी के विकास में सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उन्नीसवी सदी में खड़ी बोली का विकास एक क्रांतिकारी घटना थी। जहाँ ब्रज, अवधी जैसी भाषाए अपनी महान साहित्यिक रचनाओं रामचरित मानस व सूरसागर के कारण प्रसिद्ध रही वही आम की बोली खड़ी बोली सम्पूर्ण भारत की प्रमुख बोली के रूप में उभरी। इसमें आधुनिकता, अंग्रेजी शासन व समाज सुधार आन्दोलनों की महती भूमिका रही।

**सामाजिक सुधार आन्दोलनों की भूमिका**

आधुनिक चेतना का विकास ⇒ तर्कवाद, मानववाद आधुनिक बोध के विकास हेतु आर्य समाज, ब्रह्म समाज, भारत

drishti | दृष्टि The Vision

मोहिला मंडल द्वारा खड़ी बोली के जन जागरण किया गया।

(2) सामाजिक सुधार आंदोलन कारियों तथा द्वारा ⇒ राजा राम मोहन राय ने अपने पत्र उदन्त मार्तण्ड तथा एकेश्वर वाद द्वारा खड़ी बोली का विकास। तथा स्वामी दयानंद सरस्वती द्वारा 'सत्यार्थ प्रकाश' की रचना हिन्दी भाषा में। साथ ही आर्य समाज का नियम के जे एक 'खड़ी बोलना' भी था

(3) संस्थाओं द्वारा विकास ⇒

हेनरी विवियन डेरेजियो के 'यंग बंगाल' आंदोलन तथा आर्य समाज के 'एंग्लो वैदिक कालेज' द्वारा हिन्दी विकास लाला लाजपतराय द्वारा पंजाब व हरियाणा के

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

हिंदी का स्वतंत्र विषय के रूप में विकास हेतु प्रयास।

(9) समाज सुधारकों द्वारा पत्र पत्रिकाओं व किताबों द्वारा हिंदी का विकास – 'ज्योतिबा फुले गुलाम गिरी', यंग इंडिया, तथा थियोसोफिकल सोसायटी की एनी बिसेन्ट के पत्र – कामन वील व न्यू इंडिया द्वारा।

अतः खड़ी बोली के विकास मे स्वामी विवेकानंद का शिकागो भाषण हो या राजा राम मोहन राय, ईश्वर चंद विद्यासागर के प्रयास सभी ने महत्वपूर्ण भूमिका अदा की जिसके फलस्वरूप हिंदी भारतेंदु मंडल के दौर मे गद्य व पद्य की प्रमुख भाषा के रूप में उभरने लगी।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) देवनागरी लिपि के मानकीकरण हेतु सुझाव दीजिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

देवनागरी लिपि भारत की राजभाषा की आधिकारिक लिपि है। देवनागरी पूर्णतया वैज्ञानिक व विकसित लिपि है जो आर्य भाषाओं, गुजराती, मराठी इत्यादि में भी प्रयोग की जाती है।

देवनागरी के मानकीकरण के सुझाव ⇒

① अनावश्यक तथा प्रयोग से बाहर वाली ध्वनियों के चिह्नों को बाहर करना - जैसे ऌ, ॠ

② लिपि में दुरूहता व सरलता हेतु दोहरेपन के प्रयोग को बन्द करना - उदाहरण . भ-भ, क्ष-क्ष

③ एक चिह्न एक ही ध्वनि का सम्बंध तथा एक ध्वनि का एक ही चिह्न।

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(4) मराठी के मूर्धन्य 'ळ' का शामिल किया जाना चाहिए।

(5) चूंकि अंग्रेजी के ए तथा ऑ प्रयोग सामान्य है अतः इन्हे देवनागरी लिपि में शामिल किया जाना चाहिए।
उदा - डॉक्टर

(6) अरबी व फारसी ध्वनियों के लेखन हेतु 'क़ ख़ ग़ घ़' के साथ नुक्ता लगाने की प्रथा चल पड़ी है अतः इसे देवनागरी में शामिल करना आवश्यक है।

(7) अखिल भारतीय लिपि बनाने हेतु द्राविड, आर्यों, व मुंडा भाषाओं की कुछ ध्वनियों के प्रतीकों का देवनागरी में शामिल किया जा सकता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(8) य श्रुति व 'व' श्रुति ध्वनियों के मध्य समन्वय स्थापित करना आवश्यक।

(9) द्वन्द्व समास की प्रवृत्ति में (-) प्रयोग किया जाना चाहिए
उदाहरण - 'दाल-बाटी'

(10) सर्वनाम के साथ कारकीय परसर्गों को सटाकर तथा संज्ञाओं के साथ अलग से लिखना -
उद. ~~मेरे~~ 'मुझको', 'राम को'

अतः देवनागरी को अखिल भारतीय लिपि व मानकीकरण हेतु राज भाषा विभाग द्वारा निरंतर कार्य करना सराहनीय है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

## खण्ड - ख

5. निम्नलिखित पर लगभग 150 शब्दों में टिप्पणी लिखिये: 10 × 5 = 50

(क) केशव: कठिन काव्य के प्रेत

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

केशवदास अपनी मौलिकता व रामचंद्रिका में अपने चुस्त व चमत्कारिक संवादों के कारण रीतिकाल के प्रमुख कवि माने जाते है परन्तु आचार्य शुक्ल ने केशवदास के काव्य पर कुछ प्रश्न उठाये है कि केशव काव्य कठिन है तथा समास सफलता रहित है।

शुक्ल जी ने प्रथम कठिन काव्य केशव के अनावश्यक पद न्यूनता व वाक्य न्यूनता के आधार पर कहा है जिसके पाठक को कठिनाई व असहजता होती है।

उदा - "सी | धी | री | धी |

राम | नाम | सत्य | धाम (~~वाक्य~~ पद न्यूनता)

" चाल जो रघुनन्द जह /

~~पद~~ वाक्य - न्यूनता

drishti | दृष्टि The Vision

आ भुत्र का दूसरा आक्षेप केशव के काव्य कर्म के आधार पर है केशव ने रामचंद्रिका मे सम्बंध निर्वाह व रसात्मक स्थलों की पहचान ठीक नही की जब ऐसे राम वन गमन प्रसंग जबकी गोस्वामी का राम वन गमन व भरत विलाप प्रसंग अत्यन्त प्रशंसनीय है

केशव की रामचंद्रिका की प्रबंधात्मकता व महाकाव्यत्व पर भी प्रश्न उठे है

आचार्य रामस्वरूप चतुर्वेदी ने केशव की छंद वैविध्य व प्रयोगशीलता के कारण केशव के काव्य को छंदो का अजायबघर कहा है

दरअसल केशव के की कठिनाई का कारण उनकी दृष्टि है वे आचार्य, संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान व इतिहासकार की विशेषताओं से युक्त थे जिससे उनका काव्य कठिन हो गया परन्तु उनकी संवाद कौशल चमत्कारिक है — "भार का मध नृपताल गर्व सुरलोक है जुट लोक लये।"



उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) नाटककार रामकुमार वर्मा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

~~अ~~ रामकुमार वर्मा हिन्दी के महान नाटककार के साथ-साथ एकांकीकार के रूप में प्रसिद्ध है।

रामकुमार वर्मा ने अपने नाटक व एकांकियों में कथानक प्रसाद व मोहन राकेश की तरह प्राचीन भारत के इतिहास व आधुनिक चेतन के समन्वय मे लिये है।

रामकुमार वर्मा की प्रमुख कृतियों में 'पृथ्वीराज की आंखें' 'रेशमी टाई', ~~[illegible]~~ 'औरंगजेब', इत्यादि प्रमुख है।

रामकुमार वर्मा की भाषा

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नवजागरण चेतना के साथ आधुनिक लघुमानव की चेतना मुखर है।

रामकुमार वर्मा के नाटक अपने यथार्थवादी दृष्टिकोण के साथ-साथ अपनी व्यंग्य क्षमता व मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद के लिए जाने जाते है।

रामकुमार वर्मा ने अपने नाटकों में स्त्री चेतना, मध्यम वर्गीय आदर्शी मूल्य तथा स्त्री-पुरुष सम्बंधों के प्रति अपने दृष्टिकोण को व्यक्त किया है जो इन्हें विशेष स्थान प्रदान करता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ग) 'अंधायुग' नाटक का महत्त्व।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

'अंधायुग' धर्मवीर भारती का गीति-नाटक है जिसकी रचना में धर्मवीर भारती ने महाभारत का ऐतिहासिक कथानक लिया है।

अंधायुग में भारती ने कौरवों की माता के आधार पर कृष्ण के प्रति अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

गांधारी कहती है—

"जिसे तुम कहते हो स्वामी
वंचक है वह, जिसने परम्परा
मर्यादा को जब चाहा तोड़ा।"

अंधायुग में ~~मोहन~~ धर्मवीर भारती ने कर्ण की वीरता, साहस व अदम्य जिजीविषा व नियति के प्रति भी

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अपना दृष्टिकोण व्यक्त किया है
तथा नैतिकता की नवीन परिभाषा दी है-
" मैं रथ का टूटा पहिया
पर मुझे फेंको मत "

अंधायुग नाटक का कथानक
यद्यपि ऐतिहासिक है परन्तु इसकी समस्या
आज भी ही है- स्त्री-पुरुष सम्बन्ध
मानव का अकेलापन, संत्रास, निर्णयहीनता
तथा ~~पश्चाताप~~ पश्चाताप की अन्तहीन
यात्रा का वर्णन धर्मवीर भारती ने किया है
अतः अंधायुग अपने शिल्प व
युगबोध के कारण धर्मवीर भारती
का प्रमुख नाटक है।

drishti | दृष्टि The Vision

(घ) निराला की कविता 'तुलसीदास' का 'प्रतिपाद्य'

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

निराला का व्यक्तित्व बहुआयामी व अनन्य विशेषताओं को धारण करता है। निराला ने जहां 'राम की शक्ति पूजा' व 'सरोज स्मृति' में छायावाद की सीमाओं को तोड़ा वहीं कुकुरमुत्ता में प्रगतिवाद की।

'तुलसीदास' निराला की आत्माभिव्यक्ति को व्यक्त करने वाली कविता है इसमें निराला ने तुलसीदास के जीवन संघर्षों व उनके अपने पत्नी से अत्यधिक प्रेम करने तथा पत्नी द्वारा लज्जित किये जाने पर ईश्वर भक्ति में रमने की घटनाओं को लिया है।

तुलसीदास की तरह

drishti
दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

निराला जी मनोहरा देवी से अत्यन्त प्रेम करते थे तथा जिस तरह तुलसी दास ने रामचरित मानस में राम के चरित्र का वर्णन किया उसी तरह ~~राम चरित्र~~ ~~मानस~~ राम की शक्तिपूजा में निराला जी अपनी राम भक्ति को व्यक्त करते है।

तुलसी दास के निराला ने उसी अपनी भक्ति भावना को व्यक्त किया बालक अपनी भक्ति को तुलसी तरह दास ने राम के चरणों पर अपना अनन्य विश्वास से रखा।

अतः तुलसी दास निराला की महत्वपूर्ण कड़ियाँ है जो निराला के निरालेपन को व्यक्त करती है।

(ङ) तारसप्तक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

तार सप्तक - सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय द्वारा संपादित कुछ कवियों की कृतियों का संग्रह था। तार सप्तक में - मुक्तिबोध, केदारनाथ अग्रवाल, अज्ञेय, नागार्जुन, निराला, धर्मवीर भारती, केदारनाथ सिंह, दिनकर इत्यादि कवियों की रचनाओं को शामिल किया गया था।

तार सप्तक के प्रकाशन के साथ ही प्रगतिवाद के स्थान पर प्रयोगवाद का आरम्भ हुआ।

अभी तक कुल चार तारसप्तक प्रकाशित हुए हिन्दी कविता में

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

कविता को आम आदमी व मध्यम वर्ग से जोड़ने में नागार्जुन का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

नई कविता की पूर्व पीठिका के नागार्जुन ने 'नई कविता' की घोषणा का कार्य किया।

अतः नागार्जुन का हिन्दी कविता में वही एक स्थान है जो खड़ी बोली के पद्यात्मक विकास में परिमल की भूमिका का।

6. (क) गोस्वामी तुलसीदास की भक्ति-चेतना के संदर्भ में विनयपत्रिका का अनुशीलन कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ख) घनानंद के काव्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) निराला की प्रगति-चेतना पर विचार कीजिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

7. (क) हिंदी की प्रगतिवादी और प्रयोगवादी काव्यधाराओं की तुलना कीजिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ख) पद्माकर के शृंगार-वर्णन पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

(ग) माखनलाल चतुर्वेदी के काव्य में निहित 'राष्ट्रीयता की चेतना' पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये।
(Candidate must not write on this margin)

drishti | दृष्टि The Vision

**8.** (क) छायावादी कविता की 'सौंदर्य-चेतना' की उदात्तता पर प्रकाश डालिये। 20

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

छायावाद 1915 से लेकर 1936 तक हिन्दी साहित्य मे पंत, प्रसाद, निराला व महादेवी वर्मा द्वारा विकसित काव्यान्दोलन था। जो पश्चिम के रूसो की 'प्रकृति की ओर लौट चलो' से प्रभावित स्वच्छंदतावाद से प्रेरित था। छायावाद न केवल अपनी वैयक्तिकता, स्वतंत्रता चेतना तथा नवजागरण हेतु जाना जाता है बल्कि इसकी सौन्दर्य चेतना अनुपम व विशेष प्रकार की है

**छायावादी कविता की सौन्दर्य चेतना**

① छायावादी कविता प्रकृति की सौन्दर्य चेतना का विशेष वर्णन किया है -

" भारत माता ग्राम वासिनी
खेतों में फैला है श्यामल "

(पंत)

② छायावाद के मानव सौन्दर्य का

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अधिक महत्व दिया गया है —

" सुन्दर है विहग
× × ×
मानव तुम सबसे सुन्दरतम "

(3) छायावाद में नारी सौन्दर्य को महत्त्व, साथी निश्छल सौन्दर्य का वर्णन और रीतिकालीन भोगवादी नजरिये के एक दम विपरीत है —

" तुमको छूने में था प्राण
संग में पावन गंगा स्नान

(4) छायावादी कवि नारी सौन्दर्य के साथ-साथ ~~स्वतंत्र~~ ~~रू~~ प्रकृति के मानवीकरण पर बल देता है —

" मेघमय आसमान से
उतर रही है
संध्या सुन्दरी परी सी
धीरे-धीरे-धीरे "

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(5) छायावादी कविता कवि ने प्रकृति का सौन्दर्य नारी सौन्दर्य से भी अधिक रमणीय व महत्वपूर्ण दिखाया है -

"छोड़ द्रुमों की मृदु छाया, तोड़ प्रकृति से भी माया।
बाले तेरे बाल जाल में कैसे उलझा दूं
लोचन" (पंत)

(6) छायावादी कविता ने प्रकृति विराट व भैरव रूप • सौन्दर्य का भी वर्णन किया है विशेषतः निराला की राम की शक्ति पूजा, व कुकुरमुत्ता जैसी रचनाओं में -

"उगलता गगन घन अंधकार"

अतः छायावादी कवि अपनी निजता, सौन्दर्य चेतना, वैयक्तिकता, स्वातंत्र्य भावना व भावों की भावनात्मक

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

अभिव्यक्तियों के कारण अत्यन्त प्रसिद्ध है। ~~[illegible]~~ सौन्दर्य के चित्र विशेषतः सुकुमार कवि पंत के काव्य में देखे जा सकते हैं। वहीं महादेवी वर्मा के काव्य में पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों के सौन्दर्य वर्णन है जो छायावादी कविता को संश्लिष्ट सौन्दर्य युक्त कविता बनाता है।

drishti | दृष्टि The Vision

(ख) मोहन राकेश के नाटक 'आधे-अधूरे' के रचना-वैशिष्ट्य पर प्रकाश डालिये। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

मोहन राकेश सजग शिल्पी नाटककार है। वह वे रंगमंच की माँग व दृष्टि के आधार पर नाटक की रचना करते है। उनके प्रमुख नाटकों में लहरों के राजहंस, आषाढ़ का एक दिन व आधे अधूरे प्रमुख है।

आधे-अधूरे राकेश का प्रमुख यथार्थवादी नाटक है जो मानव की विवशता, एकांतता, आत्मनिर्वासन व निर्णय हीनता की कठिनाई के साथ-साथ पारिवारिक व वैवाहिक सम्बंधो की दिखावटीपन व कमजोरियों को दर्शाता है। मुख्यतः सार्त्र के अस्तित्ववादी अवधारणा से प्रेरित है।

आधे-अधूरे के प्रमुख पात्रों में महेन्द्र नाथ व सावित्री है जो एक दूसरे को बिल्कुल नापसन्द करते है फिर भी

drishti | दृष्टि The Vision

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

साथ रहने को मजबूर है तथा अपनी यौन चेतना के लिए भटकते है परन्तु हमेशा अपूर्ण ही पाते है

आधे अधूरे की विशिष्टता

① भाषा - आधे अधूरे की भाषा आम-बोल चाल की भाषा है जहाँ आषाढ का एक दिन में ऐतिहासिक वातावरण के कारण तत्सम है वही आधे-अधूरे में रोजमर्रा की भाषा का प्रयोग किया है

② पात्र ⇒ आधे अधूरे के पात्रो की संख्या अत्यंत ही सीमित है। मो. मोहन राकेश ने एक ही अभिनेता से पान्च पात्रों का अभिनय प्रयोग किया है

③ संवाद ⇒ आधे अधूरे के संवाद छोटे-चुस्त गतिशील है तथा अपनी सजीवता व धारदार भाषा को लेकर

drishti | दृष्टि The Vision

महत्वपूर्ण है

(4) रंग संकेत - आधे-अधूरे के मोहन राकेश ने पर्याप्त रंग संकेत दिये है

(5) कथानक व भावानु - आधे अधूरे की कलात्मक व भावानु यथार्थवादी महत्व व्यक्ति जीवन से ली गई है

आधे अधूरे के मोहन राकेश का यथार्थवादी दृष्टिकोण मुखर रूप से सामने आया है जहां लहरों के राजहंस का बुद्ध व आषाढ़ का एकदिन का कालीदास घर छोड़कर चले जाते है वही आधे अधूरे का महेन्द्रनाथ वापिस घर लौट आते है जो इनकी यथार्थवादी दृष्टि को दर्शाता है। साथ ही सामान्य व सरल शिल्पविधान व अस्थिर अंक विधान आधे अधूरे को विशिष्ट नाटक बनाते है।

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

(ग) 'प्रगतिशील चेतना' की दृष्टि से 'नाथ-साहित्य' पर विचार करते हुए उसका साहित्यिक महत्त्व बताइए। 15

उम्मीदवार को इस हाशिये में नहीं लिखना चाहिये। (Candidate must not write on this margin)

नाथ साहित्य 13-14वीं सदी में पूर्वी मध्य भारत में नाथ पंथी योगियों द्वारा अपनी साम्प्रदायिक मान्यताओं के प्रचार हेतु दोहा, सबद व चर्यापदों के आधार पर रचा गया। प्रमुख नाथों में गोरखनाथ, मछन्दर नाथ, जलन्धर नाथ, चर्पटीनाथ प्रमुख थे।

नाथ साहित्य में धार्मिक आडम्बर, जातिवाद, साम्प्रदायिकता, ऊँच नीच, भेद भाव, इत्यादि का विरोध किया गया है तथा आत्म संयम, कठोर साधना, निवृत्ति मूलक भक्ति भावना पर बल दिया गया है।

गोरखनाथ ने आत्म संयम पर अत्याधिक बल दिया जो गोरखबानी के

जैनानिट उनके पदों में देख सकते है -

" नौ लख पातरि आगे नाचे, पीछे सहज अखारा
ऐसो मन ले जोगी खेलै तब अन्तरि बसै भंडारा।"

नाथ साहित्य में गुरु भक्ति पर भी अत्यधिक बल दिया गया है - तथा सतगुरु की महिमा को दिखाया है -

" आणि के अजाणि होय बात तू ले पछाणि
चेला होइगो लुआ लाभ होइगो, गुरु होइगो आणि"

वही नाथो ने सिद्धों की भोगवादी पँचमकार पद्धति के स्थान पर योग व निवृति मार्ग का अनुसरण किया -

गोरख जगायो जोग,
भगति भगायो भोग "

यद्यपि नाथ ने अपने दोहो, पर्यावदो के मानव मात्र की एकता, धार्मिक आडम्बरो का विरोध किया परन्तु नाथ

drishti | दृष्टि The Vision

**Space for Rough Work**

साहित्य में नारियों के सम्बन्ध में
संकीर्ण व माया रूपी दिखाया गया है
जो उनकी प्रगतिशील चेतना को
संकीर्ण करता है ~~परन्तु यह~~
परन्तु नारी साहित्य अपनी
संवेदनागत नीतियों, आडम्बरों व
रूढ़ि विरोध इत्यादि के कारण
प्रगतिशील साहित्य माना
जा सकता है